

विचार बिन्दु

ज्ञानी जन विवेक से सीखते हैं, साधारण मनुष्य अनुभव से, अज्ञानी पुरुष आवश्यकता से और पशु स्वभाव से। -कौटिल्य

छात्रसंघ चुनाव : दिल के खुश रखने को खयाल अच्छा है!

राजस्थान में इन दिनों शिक्षण संस्थाओं में छात्र संघ चुनाव करवाने की मांग ज़ोर-शोर से की जा रही है। विभिन्न राजनीतिक दलों के नेतागण, और विभिन्न राजनीतिक दलों से संबद्ध विद्यार्थी संगठन भी इसी तरह की मांग करते हुए आंदोलित हैं। बहुत रोचक बात यह है कि राजस्थान में अशोक गहलोत के नेतृत्व वाली पिछली सरकार ने वर्ष 2023 में छात्र संघ चुनाव न कराने का फैसला किया था। तब प्रदेश भर के विश्वविद्यालयों के कुलपतियों ने नई शिक्षा नीति 2020 लागू करने के साथ ही विश्वविद्यालयों में चल रही प्रवेश और परीक्षा प्रक्रिया का हवाला देते हुए छात्रसंघ चुनाव पर रोक लगाने की सलाह दी थी। इस सलाह को राज्य सरकार ने स्वीकार कर लिया था और तदनुसार उच्च शिक्षा विभाग ने एक आदेश में यह भी कहा था कि छात्र संघ चुनावों में धनबल और बाहुबल का खलल उपयोग किया जा रहा है, जो लिंगदोह कमिटी की सिफारिशों का उल्लंघन है। इस आदेश में यह भी कहा गया था कि यदि चुनाव कराए जाते हैं तो पढाई प्रभावित होगी और राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत सेमेस्टर सिस्टम लागू नहीं हो सकेगा। बहुत रोचक बात है कि इसके लगभग एक बरस बाद, जब राजस्थान में कांग्रेस की नहीं, भाजपा की सरकार बन चुकी है और अशोक गहलोत का पदमन भूतपूर्व मुख्यमंत्री हो गया है, वे कह रहे हैं कि छात्रसंघ के चुनाव करवाए जाने चाहिये क्योंकि छात्र संघ राजनीति की पहली पाठशाला होते हैं और इनके चुनाव करवाने से विद्यार्थियों में लोकतंत्र और संविधान के प्रति जागरूकता आती है। हमारे यहां राजनीति की जो रिवाजत है उसके चलते यह आश्चर्यजनक नहीं लगता है कि जब आप किसी पद पर होते हैं तो आपका कर्म अलग होता है और जब आप पद पर नहीं होते हैं तो आपके विचार उसके एकदम विपरीत होते हैं। लेकिन यह बात बड़ी रोचक लग रही है कि जहां राज्य की सरकार छात्र संघ चुनाव को लेकर कुछ भी कहने से बच रही है वहीं उसके अपने दल के कई बड़े लोग खुलकर छात्र संघ चुनाव करवाने की मांग कर रहे हैं। कुछेक केंद्रीय मंत्री भी इस मांग के पक्ष में अपने बयान दे चुके हैं। जो न इधर हैं और न उधर, वे तो खुलकर इस मांग का समर्थन कर ही रहे हैं। कुल मिलाकर स्थिति यह है कि राजनीतिक दलों के लोग और राजनीति में रुचि रखने वाले विद्यार्थी छात्र संघ चुनाव की मांग कर रहे हैं और सरकार अभी इस मामले पर मौन धारण किए हुए है।

जो लोग छात्र संघ चुनाव की मांग करते हैं उनके मुख्य तर्क ये होते हैं कि इनसे विद्यार्थियों को लोकतंत्र का प्रशिक्षण मिलता है, उनमें नेतृत्व भावना का विकास होता है, उनमें से जिनमें भी राजनीति में जाने की आकांक्षा है उन्हें इस बात का प्रशिक्षण मिलता है और विद्यार्थियों को प्रशासन तक अपनी बात पहुंचाने और अपनी असुविधाओं का निवारण करवाने का एक उपयुक्त माध्यम मिलता है। इसी तरह के अन्य अनेक तर्क भी दिए जाते हैं, जैसे अशोक गहलोत जी ने कहा कि इनसे विद्यार्थियों में संविधान के प्रति जागरूकता उत्पन्न होती है। कितना अच्छा होता, अगर वे इतना और बता देते कि यह काम होता कैसे है! ऐसा नहीं है कि सारा विद्यार्थी समुदाय, सारा शैक्षिक तंत्र और सारा समाज इन चुनावों के पक्ष में ही है और इन्हें हितकारी मानता है। ऊपर हमने राजस्थान के उच्च शिक्षा विभाग के जिस आदेश का जिक्र किया है उसमें धनबल और बाहुबल की बात कह दी गई है। ऐसा तो है नहीं कि धनबल और बाहुबल का यह खेल केवल पिछले वर्ष ही खेला गया था, न तो इससे पहले खेला गया और न -अगर फिर से चुनाव हुए- इस वर्ष खेला जाएगा। जहां तक धनबल की बात है, अगर यह खेल पुराना न होता तो लिंगदोह समिति को अपनी रिपोर्ट ही नहीं देनी पड़ती। 23 मई, 2006 को जारी इस 88 पृष्ठों की रिपोर्ट पर एक नज़र डालने से ही यह बात स्पष्ट हो जाती है कि छात्रसंघ चुनावों में बहुत सारी विकृतियां आ गई थीं। अब वे विकृतियां और बढ़ी हैं, कम नहीं हुई हैं। और बावजूद इस बात के कि इस रिपोर्ट की अनुशंसाएं अभी भी प्रभावी हैं, हर कोई जानता है कि वास्तव में तो उनका पालन नहीं होता है। सिर्फ दो बातों का जिक्र यहां करना चाहूंगा। इस रिपोर्ट में यह निर्देशित किया गया है कि छात्रसंघ के चुनावों में राजनीतिक दलों का हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए। क्या वास्तव में ऐसा हो रहा है? हर राजनीतिक दल की अपनी विद्यार्थी इकाई है

अगर पूरे देश की राजनीति को देखें और यह जानने का प्रयास करें कि कुल कितने लोग इन चुनावों से आगे आए हैं, तो जो तस्वीर उभरेगी वह बहुत चमकदार तो नहीं ही होगी। और मान लीजिए कि कुछ लोग इन चुनावों की सीढियां चढ़कर विधान सभाओं या लोकसभा तक पहुंच भी गए तो यह भी देखिए कि इसके लिए हमने कितनी कीमत चुकाई है!

और वह बाकायदा टिकिट वितरित करती है। अपने प्रशासनिक अनुभव के आधार पर मैं कह सकता हूँ कि सभी राजनीतिक दलों के बड़े नेता इन चुनावों पर पैनी नज़र रखते हैं और इनमें खुलकर हस्तक्षेप करते हैं। जहां तक चुनाव पर होने वाले खर्च की बात है, लिंगदोह समिति ने अपनी अनुशंसा (6.6.1) में कहा है कि प्रत्येक प्रत्याशी के लिए खर्च की अधिकतम सीमा पांच हजार रुपये होगी। जहां तक मेरी जानकारी है, यह राशि अब भी यथावत है, इसमें कोई वृद्धि नहीं की गई है, और इसलिए हमें मान लेना चाहिए कि सारे लोग इस सीमा के भीतर खर्च करके चुनाव लड़ रहे हैं। अगर उन्होंने इससे ज़्यादा खर्च किया होता तो निष्पक्ष ही उन पर कोई कार्रवाई हुई होती। अब जरा बाहुबल की भी बात कर ली जाए। चुनाव के दौरान, और अनेक बार उसके बाद भी विभिन्न छात्र समूह जो गैंग वॉर का मंजर प्रस्तुत करते हैं, उसे याद करके समझा जा सकता है कि इन चुनावों में बाहुबल का कैसा और कितना उपयोग होता है।

क्या ये निर्वाचित संघ विद्यार्थियों की समस्याएं दूर करवा पाते हैं? क्या उनकी दिलचस्पी ऐसा करने में होती है? मैंने बहुत लम्बे समय तक शिक्षा के क्षेत्र में काम किया है, और अब उससे निवृत्त हो जाने के बाद भी उस क्षेत्र में मेरी रुचि बनी हुई है। मैं बहुत उत्सुकतापूर्वक अखबारों को खंगालता हूँ, यह जानने के लिए कि छात्र संघों के निर्वाचित पदाधिकारी अपने शैक्षिक प्रशासन के सामने विद्यार्थियों की कौन-कौन से समस्याएं लेकर जाते हैं। मैं बहुत क्षोभ के साथ लिख रहा हूँ कि मैं ऐसे समाचार देखने-पढ़ने को तरस गया हूँ। उनकी मांग अपने लिए कमरों की, सुविधाओं की और शपथ ग्रहण समारोह में अपनी पार्टी या अपनी जाति के नेता को बुलाने की सीमा को शायद ही कभी पार करती हो। जहां बड़ा बजट होता है वहां उनकी नज़र उसके दुरुपयोग पर भी रहना अपवाद नहीं होता है। भले ही ऐसा सब न करते हों। अगर जुलाई अगस्त में चुनाव होते हैं तो दिसम्बर तक तो छात्र संघ का उद्घाटन होता है, और यदा कदा उससे पहले अध्यक्ष के कमरे के उद्घाटन का नया जुड़ा कार्यक्रम संपन्न होता है। और साल का दूसरा कार्यक्रम वार्षिक सांस्कृतिक समारोह और पुरस्कार वितरण का होता है, अगर हो पाए। प्रायः तो यह नहीं ही होता है। बस यह काम कुल मिलाकर निर्वाचित छात्र संघ करते हैं।

हां, इन चुनावों के बहाने कुछ लोग राजनीतिक दलों के नेताओं के निकट आ जाते हैं, बदले में राजनीतिक दलों को भी भावी या नए मतदाताओं तक पहुंचने का मौका मिल जाता है। जो लोग नेताओं के निकट आते हैं उनमें से कोई-कोई आगे जाकर कुछ बन जाता है और उसी का नाम बार-बार लेकर इन छात्र संघ चुनावों को लोकतंत्र की नर्सरी कहकर संबोधित कर दिया जाता है। अगर पूरे देश की राजनीति को देखें और यह जानने का प्रयास करें कि कुल कितने लोग इन चुनावों से आगे आए हैं, तो जो तस्वीर उभरेगी वह बहुत चमकदार तो नहीं ही होगी। और मान लीजिए कि कुछ लोग इन चुनावों की सीढियां चढ़कर विधान सभाओं या लोकसभा तक पहुंच भी गए तो यह भी देखिए कि इसके लिए हमने कितनी कीमत चुकाई है! शैक्षिक संस्थानों का वातावरण इनकी वजह से कितना प्रदूषित हुआ है, कितनी अशांति वहां फैली है और इन चुनावों के नाम पर हमारे संभावनाशील युवाओं ने कितनी गलत बातें सीखी हैं।

असल में कुछ बातें हैं जो कहने-सुनने-पढ़ने में बहुत भली लगती हैं, और इसीलिए उन्हें बार-बार दुहराया जाता है। लेकिन जैसा हमारे मरहम चर्चा कह गए हैं:-

हम को मालूम है जन्नत की हकीकत लेकिन दिल के खुश रखने को गालिब थे खयाल अच्छा है!

तो यह मानकर खुश हो लीजिए कि छात्र संघ के चुनाव विद्यार्थियों के लिए, शिक्षण संस्थाओं के लिए और समाज के लिए - सबके लिए बहुत हितकारी है!

-अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

मेवाड़ संभाग स्तरीय प्रतिभावान सम्मान समारोह में पांच सौ से अधिक प्रतिभाएं सम्मानित

भीलवाड़ा, (निसं)। राजस्थान प्रदेश माली (सेनी) महासभा एवं माली सैनी समाज कर्मचारी एवं अधिकारी विकास संस्था के संयुक्त तत्वावधान में माली समाज का भीलवाड़ा शहर में नगर परिषद स्थित टाउन हॉल में मेवाड़ संभाग का प्रतिभावान सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह में 500 से भी अधिक प्रतिभाओं सहित समाज के कर्मचारियों, भामाशाहों एवं जन प्रतिनिधियों का सम्मान किया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान सरकार के सामाजिक अधिकारिता एवं न्याय विभाग के केबिनेट मंत्री अविनाश गहलोत ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि आज के युवाओं का आईक्यू ही नहीं बढ़ा है, बल्कि वे शिक्षा के क्षेत्र में भी आगे बढ़ रहे हैं। अब विद्यार्थियों के 100 में से 100 नंबर आ रहे हैं। उनकी होशियारी भी बढ़ी है और दिमाग भी तेज हुआ है। उन्होंने यह भी कहा कि माली समाज के लोग मेहनती होने के साथ शिक्षा व अन्य क्षेत्र में भी अपने झण्डे गाढ़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षा से परिवार ही संस्कारित नहीं होता बल्कि देश का भी विकास होता है।



सामाजिक अधिकारिता एवं न्याय विभाग मंत्री अविनाश गहलोत ने प्रतिभाओं को सम्मानित किया।

उन्होंने समाज के लोगों से कुरीतियों दूर करने का आह्वान किया और कहा कि अपने समाज की कुरीतियां खुद मिटाएं। समारोह को अध्यक्षता बंदीकुई विधायक भागचंद सैनी ने की। विशिष्ट अतिथि माण्डल विधायक उदयलाल भडगणा, राजस्थान प्रदेश माली सैनी महासभा के प्रदेश अध्यक्ष ताराचंद गहलोत, महात्मा फूले राष्ट्रीय संस्थान के अध्यक्ष अनुभव चंदेल, मोतीलाल सांखला, माली सैनी समाज कर्मचारी

अधिकारी विकास संस्था के प्रदेश अध्यक्ष सुरेश सैनी, पूर्व अध्यक्ष हनुमान प्रसाद सैनी, महासचिव मदनलाल सैनी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुशील सैनी एवं औरकार माली थे। राजस्थान प्रदेश माली (सेनी) महासभा के प्रदेश महामंत्री गोपाल लाल माली ने सम्मानित होने वाली सभी प्रतिभाओं को सम्मान के लिए बधाई देते हुए उनसे आग्रह किया कि वे हमेशा शिक्षा व सामाजिक क्षेत्र में आगे बढ़कर समाज का नाम रोशन

करें। साथ ही संबोधित करते हुए समाज की तरफ से यह पीड़ा भी उजागर की कि भीलवाड़ा में माली समाज के लाखों वोट होने के साथ ही राजनीतिक नियुक्तियों व पार्टियों में प्रतिनिधित्व न के बराबर है। समारोह की शुरुआत महात्मा फूले व सावित्री बाई फूले की प्रतिमा पर दीप प्रज्वलन के साथ हुई। तत्पश्चात् समाज के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। समारोह

■ शिक्षा से परिवार ही संस्कारित नहीं होता बल्कि देश का भी विकास होता है : अविनाश गहलोत

में समाज के कई होनहार प्रतिभाओं को नकद पुरस्कार भी दिया गया। सम्मान होने वाली प्रतिभाओं में 10वीं कक्षा के 74, 12वीं कक्षा के 124, स्नातक, स्नातकोत्तर की 26 व खेल एवं राजनीतिक नियुक्तियों में चयनित 90 व सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में श्रेष्ठ 30 प्रतिभाओं के साथ-साथ 150 से अधिक भामाशाहों व समाजसेवियों का सम्मान किया गया, जिनमें प्रमुख रूप से उदयलाल माली, सत्यनारायण डाबला, पांचू लाल माली, लादू लाल रागस्था, हरिश गहलोत, शंभूलाल माली, योगेश गहलोत, मुस्लीमर सैनी, कन्हैयालाल माली, सम्पत माली, राजू माली, सीता देवी सैनी, नारायण लाल माली शामिल थे। समारोह में भीलवाड़ा जिले सहित चित्तौड़गढ़, राजसमंद, उदयपुर, अजमेर, पाली सहित आस-पास के जिलों से हजारों की संख्या में लोग पहुंचे।

टीबा बसई में खेल मैदान की भूमि पर अतिक्रमण को लेकर युवाओं व ग्रामीणों में आक्रोश

गांव के युवाओं ने चंदा एकत्रित कर वर्ष 2017 में जोहड़ को खेल मैदान का रूप दिया था

खेतड़ी, (निसं)। खेतड़ी उपखंड के टीबा बसई के खेल मैदान पर अतिक्रमण को लेकर ग्रामीणों में आक्रोश पनप रहा है। रविवार को युवाओं ने खेल मैदान में एकत्रित होकर प्रशासन से मैदान की सीमा ज्ञान करवाने की मांग की है।

युवाओं ने बताया कि पिछले जोहड़ स्कूल के नाम से कटा हुआ खेल मैदान था। गांव के युवाओं ने आमजन से चंदा एकत्रित कर वर्ष 2017 में जोहड़ को खेल मैदान का रूप दिया, जिसके बाद खेल मैदान में युवा सेना की तैयारी तथा खेलों में भाग लेने की तैयारी कर रहे हैं। राज्य सरकार की ओर से टीबा गांव में शहीद श्याम गुर्जर राजकीय स्कूल की नई बिल्डिंग बनाने की स्वीकृति दी है, जिसका कुछ दिन पहले ही विधायक की ओर से शिलान्यास भी किया गया है।

युवाओं ने बताया कि स्कूल प्रबंधन व टेकेदार के द्वारा बनाए गए नक्शे में खेल मैदान स्कूल भवन के अंदर आ रहा है तथा मैदान का आधा हिस्सा स्कूल भवन की नई बनने वाली बिल्डिंग में चला जाएगा। खेल मैदान



युवाओं ने खेल मैदान में एकत्रित होकर प्रशासन से मैदान की सीमा ज्ञान करवाने की मांग की।

के सामने खाली जगह पड़ी हुई है। इसके बावजूद भी खेल मैदान में स्कूल भवन को बनाने का प्रयास किया जा रहा है। यदि प्रशासन युवाओं के हितों

को ध्यान में रखते हुए मैदान के सामने खाली जगह में स्कूल भवन बनाया जाए तो युवाओं को तैयारी करने के लिए खेल मैदान बच सकता है।

युवाओं ने बताया कि खेल मैदान को लेकर ग्रामीणों की ओर से तहसीलदार व अन्य प्रशासनिक अधिकारियों को अवगत भी करवाया

■ युवाओं ने खेल मंत्री व तहसीलदार को पत्र भेजकर खेल मैदान की सीमा ज्ञान व खाली जगह में स्कूल भवन बनाने की मांग की

जा चुका है, लेकिन स्कूल प्रबंधन व टेकेदार खेल मैदान में भवन बनाने पर अड़े हुए हैं। इस दौरान युवाओं ने खेल मंत्री व तहसीलदार को पत्र भेजकर खेल मैदान की सीमा ज्ञान व खाली जगह में स्कूल भवन बनाने की मांग की है। युवाओं ने बताया कि यदि जल्द ही प्रशासन ने मामले को गंभीरता से नहीं लिया तो युवाओं की ओर से खेल मैदान बचाने के लिए आंदोलन किया जाएगा। इस मौके पर रामकिशन, मायाराम, महेंद्र सिंह, लवणान, अंकित, अजीत, राजेंद्र, संदीप, अनूप, आजाद, विक्रम, दीपेंद्र, सोनू, मयंक, कुलदीप, विनोद कुमार, प्रदीप, सत्यवीर, शैलेश, सुनील, लोकेश सहित अनेक ग्रामीण मौजूद थे।

सांभर का पांच सौ वर्ष पुराना चारभुजानाथ का मंदिर गिरने के कगार पर

सांभरझील, (निसं)। सांभर का 500 वर्ष पुराना चारभुजा नाथ का मंदिर गिरने के अंतिम कगार पर है। प्रदेश में मानसून चरम पर है। मंदिर की दीवारें लगातार कमजोर हो चली हैं और कभी भी पूरी तरह से मंदिर गिरकर खंडर में तब्दील हो सकता है, लेकिन तमाम जानकारी होने के बावजूद जिम्मेदार लोगों ने अपनी चुप्पी साध रखी है। यहां के चारभुजा नाथ मंदिर के सामने स्थित सार्वजनिक चौक निर्माण के लिए पूर्व विधायक निर्मल कुमारवत की अनुशंसा पर 10 लाख रुपये का बजट निवर्तमान सरकार की ओर से मंजूर किए जाने तथा इसकी प्रशासनिक और वित्तीय स्वीकृति मिलने के बाद भी करीब एक साल से यह मामला अटका पड़ा है।

जिला परिषद जयपुर के अधिशाषी अभियंता के.सी. मोना ने 1 अगस्त 2023 को यहां के लोकल बांडी को पत्र जारी कर इसकी तकलीफ रिपोर्ट मांगवाई गई थी, ताकि बजट की प्रक्रिया को अंजाम दिया जा सके। प्राप्त जानकारी के अनुसार एक वर्ष की कालावधि के



सांभर में जीर्णोद्धार के अभाव में चारभुजानाथ का मंदिर गिरने के कगार पर है।

दौरान प्रशासनिक व वित्तीय स्वीकृति मिलने के बाद भी लापरवाही के चलते यह कार्य अटका पड़ा है। भाजपा मंडल अध्यक्ष जितेंद्र धारंग ने बताया कि मैंने खुद न कई बार नगर पालिका के अधिशाषी अधिकारी से मिलकर

इस प्रक्रिया को पूरा करवा दिया था और निर्माण कार्य के लिए टेंडर भी हो चुका है। अब समझ में नहीं आ रहा है इसके बाद भी काम चालू करने में आखिर दिक्कत क्या है। यह बताना जरूरी है कि जिस जगह चौक का

निर्माण होना है, उसके ठीक सामने 500 वर्ष पुराना चारभुजा नाथ का प्राचीन मंदिर है जो कुछ माह पहले मंडल अध्यक्ष जितेंद्र धारंग ने बताया था और लगातार दरक रहा है। जानकारी के अनुसार निवर्तमान

■ जानकारी होने के बावजूद जिम्मेदारों ने अपनी चुप्पी साध रखी है

सरकार की ओर से पर्यटन व पुरातत्व विभाग के माध्यम से यहां के धार्मिक स्थलों के जीर्णोद्धार के लिए करोड़ों रुपये का बजट जारी किया था, लेकिन इस प्राचीन मंदिर के रखरखाव और जीर्णोद्धार को पूरी तरह से गौण कर दिया गया, जिसका यहां के लोगों ने विरोध किया तो बाद में विधायक निर्मल कुमारवत के दबाव में थोड़ा बहुत काम हुआ, लेकिन पुरातत्व विभाग इसमें भी लोपापोती करके चला गया, यानी की वास्तविक रूप में जो काम होना चाहिए था वह हुआ ही नहीं। अब हालात यह है कि यहां के पुजारी राजेंद्र व्यास अब सुबह शाम मंदिर में पूजा-अर्चना के लिए जाते हैं तो सबसे पहले भगवान से दुआ करते हैं कि वह सुरक्षित वापस बाहर आ जाए। पालिका ने अपने स्तर पर इस मंदिर को लेकर कुछ ऐसा काम नहीं किया जो सारानीय रहा हो।



राशिफल

सोमवार 12 अगस्त, 2024

सावन मास, शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत् 2081, स्वाती नक्षत्र प्रातः 8:33 तक, शुक्ल योग सांय 4:25 तक, वणिज करण प्रातः 7:56 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 4:15 से वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-तुला, मंगल-वृष, बुध-सिंह, गुरु-वृष, शुक-सिंह, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज यमघट योग प्रातः 8:32 से सूर्योदय तक है। भद्रा प्रातः 7:56 से रात्रि 8:44 तक रहेगी। आज सप्तमी तिथि में वृद्धि हुई है। आज दुर्वाष्टमी व्रत और चतुर्थ सावन वन सोमवार व्रत है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:38 तक, शुभ 9:16 से 10:54 तक, चर 2:10 से 3:47 तक, लाभ-अमृत 3:47 से सूर्यास्त तक। राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:01, सूर्यास्त 7:03

मेघ
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक यात्रा संपन्न होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

तुला
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

वृष
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। विवाहित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी।

मिथुन
परिवार में शुभ-मांगलिक धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक यात्रा संपन्न हो सकती है। मातृत्व में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

धनु
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेगी।

कर्क
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी और परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में महत्वपूर्ण मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा।

कुंभ
धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। धार्मिक-मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
आर्थिक कार्यों से अटके हुए कार्य बनने लगेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक यात्रा संपन्न होगी। घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी हो सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।